है। नाट्य लोकमन, लोकमत को ध्यान में रखता है। लोकधर्म को ध्यान में रखकर लोकसिद्ध को प्राप्त करना ही नाट्य का उदेश्य होता है। मतलब, समाज की दशा को देखकर कला आगे बढ़ती है। इसमें कलाकार की कल्पनाशीलता बहुत व्यापक और अदभुत होती है। कलाकार जो भूमिका मिलती है, उसमें एकाकार करता है। इससे उसके अंदर का मैं समाप्त हो जाता है। वह उस भूमिका में आ जाता है और वही करता है जो भूमिका में होता है। कला आध्यत्मिक साधना है। कहा जाता है कि छत्तीस तत्वों में एक तत्व कला है। शिव के पास भी कला थी। उनकी कला में आनंद था। मेरे कहने का आशय ये है कि जीवन में काम हमेशा रहेगा, लेकिन उसे आनंद में बदलना ही कला है। कला वैदिक काल से है। देश का सारा साहित्य काव्य में आया है। हमें बारहवीं शताज़्दी से लेकर अठारहवीं शताज़्दी तक का कालखंड देखना चाहिए। भज़्तिकाल के सभी संतों के साहित्य में कला थी। इसलिए भारत में जब भी कोई समस्या आई कला एकदम से सामने आई और उसका समाधान दिया। छोटे–छोटे नाटक, छोटी–छोटी कविताएं, छोटे–छोटे प्रसंग अपने देश में हजारों साल से चले आ रहे हैं। कलाकार एकाकार होकर जब तक अपनी कल्पना को लोगों के मन में नहीं उतार देता है खुद को सफल नहीं मानता। भारतीय और पाश्चात कला के दृष्टिकोण में अंतर है। पाश्चात कला में लोग बाहर बैठकर अनुमान लगाते हैं, जबकि भारतीय कला में भावनाओं को देखकर निर्णय लिया जाता है। जैसे कोई विपरीत परिस्थिति आती है, कला अपना मार्ग बदल देती है। तात्पर्य ये है कि कला विशेष प्रकार का रूप लेकर चलती है। कला विशेष प्रकार के युग में विशेष प्रकार का भाव लेकर चलती है। कला भारतीय मन में अध्यात्म लेकर चलती है। पाश्चात जगत की कला अध्यात्म से बहुत दूर रहती है। अध्यात्म दिखाई नहीं देता, बल्कि वह शज़्द और साहित्य में होता है। कला केवल भाव भी नहीं है, बल्कि धर्म की आत्मा है। कला की आत्मा अध्यात्म है। ज्ञान और आनंद को लेकर चलते हुए सारी सृष्टि का जो लोकमंगल देखे और उसी में रत रहे वही कला है, वही कला का दर्शन है।

(राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सह-सरकार्यवाह माननीय कृष्ण गोपालजी ने 6 जून,2017 को तीन मूर्ति सभागार में दीनदयाल शोध संस्थान द्वारा आयोजित दृश्य एवं प्रदर्शनकारी कलाओं में भारतीय दर्शन विषय पर व्याज़्यानमाला में मार्गदर्शन किया।)

नेहरू स्मारक संग्रहालय एवं पुस्तकालय
तथा
संस्कार भारती का संयुक्त आयोजन
पं. दीनदयाल उपाध्याय जन्मशताब्दी व्याख्यानमाला
विषय– दृश्य एवं प्रदर्शनकारी कलाओं में "भारतीय दर्शन"
सायं 5:30 से 7:00 बजे
6 जून 2017 मंगलवार
ज्ञान सहयोगी–दीनदयाल शोध संस्थान, नई दिल्ली
नेहरू स्मारक संग्रहालय एवं पुस्तकालय
तथा
संस्कार भारती
का संयुक्त आयोजन